

# ॥ महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

## अनुक्रमाणिका

1. महाविद्या	02
2. महाविद्या मन्त्र	02
3. महाविद्या ध्यानम्	04
4. दश महाविद्या स्तुतिः	04
5. दश महाविद्या स्तोत्रम् ( मुण्डमाला तन्त्रोक्त )	06
6. दश महाविद्या स्तोत्रम्	08
7. महाविद्या कवचम्	10
8. दश महाविद्या कवचम्	11
9. सप्रयोग - महाविद्या स्तोत्रम् ( भैरवी तन्त्रोक्त )	13

### महाविद्या



### महाविद्या यन्त्रम्





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**

## ॥ महाविद्या मंत्र ॥

- नोट : महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्यूकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।
- मंत्र  
हूं श्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ऐं।
- काली तारा महाविद्या, षोडशी भुवनेश्वरी।  
भैरवी, छिन्नमस्ताका च विद्या धूमावती तथा ॥  
बगला सिद्धविद्या च मातंगी कमलात्मिका।  
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकृतिता ॥
- प्रवृत्ति के अनुसार दस महाविद्या के दो कुल हैं।
  1. काली कुल महाकाली, तारा, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी हैं, जो स्वभाव से उग्र हैं।  
(परन्तु, इनका स्वभाव दुष्टों के लिये ही भयानक हैं)
  2. श्री कुल महात्रिपुरसुंदरी, त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला हैं, देवी धूमावती को छोड़कर सभी सुन्दर हैं।
- प्रवृत्ति के अनुसार दस महाविद्या के तीन समूह हैं।
  1. सौम्य कोटि त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, मातंगी, कमला
  2. उग्र कोटि काली, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी
  3. सौम्य-उग्र कोटि तारा और त्रिपुर भैरवी
- पाण्डुलिपि परातन्त्र के अनुसार
 

■ पूर्वाम्नाय की देवी	पूर्णेश्वरी
■ दक्षिणाम्नाय की देवी	विश्वेश्वरी
■ उत्तराम्नाय की देवी	काली
■ पश्चिमाम्नाय की देवी	कुंजिका
■ ऊर्ध्वाम्नाय की देवी	षोडशी

दस महाविद्याएँ	दाई ओर शिव पूजन	विष्णु के दस अवतार
1. काली	महाकाल	श्री कृष्ण
2. तारा (देवी)	ओक्षोभ्य	श्री मत्स्य
3. षोडशी	कामेश्वर	श्री परशुराम
4. भुवनेश्वरी	त्र्यम्बक	श्री वामन
5. छिन्नमस्ता	क्रोध भैरव	श्री नृसिंह
6. त्रिपुर भैरवी	दक्षिणा मूर्ति	श्री बलराम
7. धूमावती	विधवा रुपिणी	श्री वाराह
8. बगलामुखी	मृत्युंजय	श्री कूर्म
9. मातंगी	मातंग (सदाशिव)	श्री राम
10. कमला	विष्णुरूप (नारायण)	श्री बुद्ध
11. दुर्गा		श्री कल्कि

- पार्वती ने विनम्र भाव से बताया-" स्वामी!
- आपके समक्ष जो कृष्ण-वर्णा देवी स्थित है वह काली है।
- आपके ऊपर महाकाल स्वरूपिणी जो नील-वर्णा देवी हैं वह "तारा" है।
- आपके पश्चिम में श्याम वर्णा और कटे हुये शीश को उठाये जो देवी खड़ी हैं वह 'छिन्नमस्तिका' हैं।
- आपके बाईं तरफ देवी "भुवनेश्वरी" खड़ी हैं।
- आपके पृष्ठ पर शत्रु मर्दन करने वाली देवी "बगलामुखी" खड़ी हैं।
- आपके अग्निकोण में 'विधवा रूपिणी-धूमावती' खड़ी हैं।
- आपके नैऋत्य कोण में देवी 'त्रिपुर सुन्दरी' खड़ी हैं।
- आपके वायव्य कोण पर देवी 'मातंगी' खड़ी हैं।
- आपके ईशान कोण पर देवी 'षोडशी' खड़ी हैं तथा
- आपके सामने देवी भैरवी रुपा होकर मैं स्वयं उपस्थित हूँ।

- महाविद्या ध्यान चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ।  
महाभीमां करालास्यां सिद्धिविद्याधरैर्युताम् ॥  
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम् ।  
एवं ध्यायेन् महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये ॥

## ॥ दश महाविद्या स्तुति ॥

- काली स्तुति रक्ताऽब्धिपोतारूणपद्मसंस्थां, पाशांकुशेषवासशराऽसिबाणान् ।  
शूलं कपालं दधतीं कराऽब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम् ॥
- तारा स्तुति मातर्तीलसरस्वती प्रणमतां सौभाग्य-सम्पत्प्रदे,  
प्रत्यालीढ –पदस्थिते शवह्यदि स्मेराननाम्भारुदे ।  
फुल्लेन्दीवरलोचने त्रिनयने कर्त्रो कपालोत्पले,  
खड्गज्वादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ॥
- षोडशी स्तुति बालव्यक्तविभाकरामितनिभां भव्यप्रदां भारतीम्,  
ईषत्फल्लमुखाम्बुजस्मितकरैराशाभवान्धापहाम् ।  
पाशं साभयमङ्कुशं च वरदं संविभ्रतीं भूतिदा,  
भ्राजन्तीं चतुरम्बजाकृतिकरैर्भक्त्या भजे षोडशीम् ॥
- भुवनेश्वरी स्तुति उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनवययुक्ताम् ।  
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुश पाशभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥
- छिन्नमस्ता स्तुति नाभौ शुद्धसरोजवक्त्रविलसद्वांधुकपुष्पारुणं,  
भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रं महत् ।  
तन्मध्ये विपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नसत्कामिनी,  
पृष्ठस्थां तरुणार्ककोटिविलसत्तेजः स्वरुपां भजे ॥
- त्रिपुरभैरवी स्तुति उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां,  
रक्तालिप्तपयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम् ।  
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं,  
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ॥



- धूमावती स्तुति

प्रातर्यास्यात्कमारी कुसुमकलिकया जापमाला,  
जयन्ती मध्याह्नेप्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ।  
सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती,  
सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालोका पातु युष्मान् ॥
- बगलामूखी स्तुति

मध्ये सुधाब्धि – मणि मण्डप – रत्नवेद्यां  
सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम् ।  
पीताम्बराभरण – माल्य – बिभूतिषताङ्गी  
देवीं स्मरामि धृत-मुद्र वैरिजिह्वाम् ॥
- मातङ्गी स्तुति

श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां,  
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकरकरासेव्यकंजांयुग्माम् ।  
निलाम्भोजांशुकान्ति निशिचरनिकारारण्यदावाग्निरूपां,  
पाशं खड्गं चतुर्भिर्वरकमलकैः खेदकं चाङ्कुशं च ॥
- कमला स्तुति

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुबल्लभे ।  
यथा त्वमचल कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ॥

## ॥ दश महाविद्या स्तोत्रम् ( मुण्डमाला तन्त्रोक्त ) ॥

- श्री पार्वत्युवाच नमस्तुभ्यं महादेव! विश्वनाथ ! जगद्गुरो ! ।  
श्रुतं ज्ञानं महादेव ! नानातन्त्र तवाननत् ॥
- इदानीं ज्ञानं महादेव ! गुह्यस्तोत्रं वद प्रभो ! ।  
कवचं ब्रूहि मे नाथ ! मन्त्रचैतन्यकारणम् ॥
- मन्त्रसिद्धिकरं गुह्याद्गुह्यं मोक्षैधायकम् ।  
श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति ज्ञात्वा विद्यां महेश्वर ! ॥
- श्री शिव उवाच दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम् ।  
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम् ॥ १ ॥
- श्मशान-साधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम् ।  
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम् ।  
तव प्रसादात् देवेशि ! सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः ॥ २ ॥
- ॐ नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्ड-मुण्ड विनाशिनि ।  
नमस्ते कालिके काल महाभय विनाशिनि ॥ ३ ॥
- शिवे रक्ष जगद्धात्री प्रसीद हरवल्लभे ।  
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत् पालन कारिणीम् ॥ ४ ॥
- जगत् क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टि - विधायिनीम् ।  
करालां विकटां घोरां मुण्ड माला विभूषिताम् ॥ ५ ॥
- हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम् ।  
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णा लङ्कार भूषिताम् ॥ ६ ॥
- हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम् ।  
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्ध विद्याधर गणैर्युताम् ॥ ७ ॥
- मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्ग शोभिताम् ।  
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गति-नाशिनीम् ॥ ८ ॥
- उग्रामुग्र-मयीमुग्र-तारामुग्र-गणैर्युताम् ।  
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम् ॥ ९ ॥
- श्यामाङ्गीं श्यामघटितां श्यामवर्ण विभूषिताम् ।  
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थ साधिनीम् ॥ १० ॥
- विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम् ।  
आद्यामाद्या गुरोराद्यामाद्यनाथ प्रपूजिताम् ॥ ११ ॥



- श्रीं दुर्गा धनदामन्नपूर्णा पद्मां सुरेश्वरीम् ।  
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखर वल्लभाम् ॥ १२॥
- त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबलागण भूषिताम् ।  
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम् ॥ १३॥
- सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागण विभूषिताम् ।  
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्म-विष्णु-हरप्रियाम् ॥ १४॥
- सर्वसिद्धिप्रदां नित्याम् नित्यगुण वर्जिताम् ।  
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम् ॥ १५॥
- विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम् ।  
महेशभक्तां माहेशीं महाकाल प्रपूजिताम् ॥ १६॥
- प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुर-विमर्दिनीम् ।  
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीज-विमर्दिनीम् ॥ १७॥
- भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम् ।  
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम् ॥ १८॥
- त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम् ।  
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्र विनाशिनीम् ॥ १९॥
- कमलां छिन्नभालां च मातङ्गीं सुरसुन्दरीम् ।  
षोडशीं विजयां भीमां धूमाञ्च बगलामुखीम् ॥ २०॥
- सर्वसिद्धिप्रदां सर्व-विद्यामन्त्र-विशोधिनीम् ।  
प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मन्त्रसिद्धये ॥ २१॥
- इत्येवं च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम् ।  
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि ॥ २२॥
- कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे ।  
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात् ।  
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धि स्यात् स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि ॥ २३॥
- चतुर्दश्यां निशाभागे शनि भौम दिने तथा ।  
निशामुखे पठेत् स्तोत्रं मन्त्र सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ २४॥
- केवलं स्तोत्रपाठाद्धि तन्त्रसिद्धिरनुत्तमा ।  
जागर्ति सततं चण्डी स्तवपाठाद्भुजङ्गिनी ॥ २५॥

॥ इति मुण्डमाला तन्त्रोक्त पञ्चदशपटलान्तर्गतं दशमहाविद्या स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

## ॥ दश महाविद्या स्तोत्रम् ॥

यह गोपनिय दसमहाविद्या स्तोत्र है और इसके पठन से समस्त प्रकार की बाधा से मुक्ति मिलती है और साधक का जीवन शक्तिपूर्ण बनता है। जीवन के प्रत्येक समस्या का निवारण इसी स्तोत्र से होता है। किसी भी शक्ति साधना में इस स्तोत्र के पठन से माँ भगवती प्रसन्न होती है। साधक चाहे तो नित्य स्तोत्र का 1,3,5,7.....108 बार पठन कर सकता है सिर्फ उच्चारण शुद्ध होना चाहिये और शरीर भी स्नान करके शुद्ध होना जरूरी है।

- ॐ नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्ड विनाशिनि ।  
नमस्ते कालिके कालमहाभय विनाशिनि ॥ ॥ १ ॥
- शिवे रक्ष जगद्धात्री प्रसीद हरवल्लभे ।  
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालन कारिणीम् ॥ ॥ २ ॥
- जगत् क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम् ।  
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ ॥ ३ ॥
- हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम् ।  
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम् ॥ ॥ ४ ॥
- हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम् ।  
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरङ्गणैर्युताम् ॥ ॥ ५ ॥
- मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम् ।  
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ॥ ६ ॥
- उग्रामुग्रमयीमुग्र तारामुग्र गणैर्युताम् ।  
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम् ॥ ॥ ७ ॥
- श्यामाङ्गीं श्यामघटितां श्यामवर्ण विभूषिताम् ।  
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम् ॥ ॥ ८ ॥
- विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम् ।  
आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम् ॥ ॥ ९ ॥
- श्रीं दुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम् ।  
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम् ॥ ॥ १० ॥

- त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम् ।  
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम् ॥ ॥११॥
- सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम् ।  
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम् ॥ ॥१२॥
- सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यां गुणवर्जिताम् ।  
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम् ॥ ॥१३॥
- विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम् ।  
महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम् ॥ ॥१४॥
- प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम् ।  
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम् ॥ ॥१५॥
- भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम् ।  
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम् ॥ ॥१६॥
- त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम् ।  
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम् ॥ ॥१७॥
- कमलां छिन्नभालाञ्च मातङ्गीं सुरसुन्दरीम् ।  
षोडशीं विजयां भीमां धूमाञ्च वगलामुखीम् ॥ ॥१८॥
- सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम् ।  
प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मन्त्रसिद्धये ॥ ॥१९॥
- इत्येवञ्च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम् ।  
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि ॥ ॥२०॥

॥ इति दश महाविद्या स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥



## ॥ महाविद्या कवचम् ॥

### ■ भैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ।  
आद्याया महाविद्यायाः सर्वाभीष्ट फलप्रदम् ॥ १ ॥

■ कवचस्य ऋषिर्देवि सदाशिव इतीरितः ।  
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता ।  
धर्मार्थ काम मोक्षाणां विनियोगश्च साधने ॥ २ ॥

■ ऐंकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि ।  
रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥ ३ ॥

■ ललाटे सुंदरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशताः ।  
भगमाला सर्वगात्रे लिंगे चैतन्य-रूपिणी ॥ ४ ॥

■ पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा ।  
उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु ॥ ५ ॥

■ माहेश्वरी च आग्नेय्यां नैऋते कमला तथा ।  
वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हीशकेऽवतु ॥ ६ ॥

■ इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्यां च यो जपेत् ।  
न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ ७ ॥

॥ इति रुद्रयामल तन्त्रोक्त श्री महाविद्या कवचम् सम्पूर्णम् ॥

## ॥ श्री दश महाविद्या कवचम् ॥

दश महाविद्या में से किसी एक की नित्य पूजा अर्चना करने से लंबे समय से चली आ रही बीमारी, भूत-प्रेत, अकारण ही मानहानी, बुरी घटनाएं, गृहकलह, शनि का बुरा प्रभाव, बेरोजगारी, तनाव, आदि सभी तरह के संकट तत्काल ही समाप्त हो जाते हैं और व्यक्ति परम सुख और शांति पाता है। इन माताओं की साधना कल्प वृक्ष के समान शीघ्र फलदायक और सभी कामनाओं को पूर्ण करने में सहायक मानी गई है।

- **विनियोगः**                      ॐ अस्य श्रीमहाविद्याकवचस्य श्रीसदाशिव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः,  
श्रीमहाविद्या देवता, सर्वसिद्धीप्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगः ।
- **ऋष्यादि न्यासः**              श्रीसदाशिवऋषये नमः शिरसी । उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे । श्रीमहाविद्यादेवतायै  
नमः हृदि । सर्वसिद्धीप्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।
- **मानसपुजनम्:**              ॐ पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं ।                      श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।  
ॐ हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं ।                      श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे समर्पयामि नमः।  
ॐ यं वायुतत्त्वात्मकं धूपं ।                      श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे आघ्रापयामि नमः।  
ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं ।                      श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे दर्शयामि नमः।  
ॐ वं जलतत्त्वात्मकं नैवेद्यं ।                      श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे निवेदयामि नमः।  
ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं ।                      श्रीमहाविद्याप्रीत्यर्थे निवेदयामि नमः।
- **कवचम्**                              ॐ प्राच्यां रक्षतु मे तारा कामरूपनिवासिनी ।  
आग्नेय्यां षोडशी पातु याम्यां धूमावती स्वयम् ॥ ॥ १ ॥
- नैऋत्यां भैरवी पातु वारुण्यां भुवनेश्वरी ।  
वायव्यां सततं पातु छिन्नमस्ता महेश्वरी ॥ ॥ २ ॥
- कौबेर्यां पातु मे देवी श्रीविद्या बगलामुखी ।  
ऐशान्यां पातु मे नित्यं महात्रिपुरसुन्दरी ॥ ॥ ३ ॥
- ऊर्ध्वं रक्षतु मे विद्या मातङ्गीपीठवासिनी ।  
सर्वतः पातु मे नित्यं कामाख्या कालिका स्वयम् ॥ ४ ॥
- ब्रह्मरूपा महाविद्या सर्वविद्यामयी स्वयम् ।  
शीर्षे रक्षतु मे दुर्गा भालं श्रीभवगेहिनी ॥ ॥ ५ ॥
- त्रिपुरा भ्रुयुगे पातु शर्वाणी पातु नासिकाम् ।  
चक्षुषी चण्डिका पातु श्रोत्रे निलसरस्वती ॥ ॥ ६ ॥
- मुखं सौम्यमुखी पातु ग्रीवां रक्षतु पार्वती ।  
जिह्वां रक्षतु मे देवी जिह्वाललनभीषणा ॥ ॥ ७ ॥

- वाग्देवी वदनं पातु वक्षः पातु महेश्वरी ।  
बाहू महाभुजा पातु कराङ्गुलीः सुरेश्वरी ॥ ८ ॥
- पृष्ठतः पातु भीमास्या कट्यां देवी दिगम्बरी ।  
उदरं पातु मे नित्यं महाविद्या महोदरी ॥ ९ ॥
- उग्रतारा महादेवी जङ्घोरू परिरक्षतु ।  
गुदं मुष्कं च मेढ्रं च नाभिं च सुरसुन्दरी ॥ १० ॥
- पादाङ्गुलीः सदा पातु भवानी त्रिदशेश्वरी ।  
रक्तमांसास्थिमज्जादीन् पातु देवी शवासना ॥ ११ ॥
- महाभयेषु घोरेषु महाभयनिवारिणी ।  
पातु देवी महामाया कामाख्यापीठवासिनी ॥ १२ ॥
- भस्माचलगता दिव्यसिंहासनकृताश्रया ।  
पातु श्रीकालिकादेवी सर्वोत्पातेषु सर्वदा ॥ १३ ॥
- रक्षाहीनं तु यत्स्थानं कवचेनापि वर्जितम् ।  
तत्सर्वं सर्वदा पातु सर्वरक्षणकारिणी ॥ १४ ॥

॥ इति श्री दश महाविद्या कवचम् सम्पूर्णम् ॥

- फलः श्रूतिः इदं तु परमं गुह्यं कवचं मुनिसत्तम ।  
कामाख्या भयोक्तं ते सर्वरक्षाकरं परम् ॥ १ ॥
- अनेन कृत्वा रक्षां तु निर्भयः साधको भवेत् ।  
न तं स्पृशेदभयं घोरं मन्त्रसिद्धि विरोधकम् ॥ २ ॥
- जायते च मनः सिद्धिर्निर्विघ्नेन महामते ।  
इदं यो धारयेत्कण्ठे बाहौ वा कवचं महत् ॥ ३ ॥
- अव्याहताज्ञः स भवेत्सर्वविद्याविशारदः ।  
सर्वत्र लभते सौख्यं मंगलं तु दिनेदिने ॥ ४ ॥
- यः पठेत्प्रयतो भूत्वा कवचं चेदमद्भुतम् ।  
स देव्याः पदवीं याति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमहाभागवते देविपुराणे श्रीमहादेव नारद संवादे श्रीमहाकामाख्या कवचम् ॥



## ॥ सप्रयोग - महाविद्या स्तोत्रम् ( भैरवी तंत्रोक्त ) ॥

- महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम् ।  
उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूत व शङ्करीम् ॥  
भगवान् शङ्कर द्वारा निर्मित उस महाविद्या को मैं कहता हूं, जो सब विद्याओं में श्रेष्ठ तथा सब जीवों को वश में करनेवाली हैं ।
- सङ्कल्पः ॐ तत्सदद्याऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रः –  
अमुकशर्माऽहं मम (अथवाऽमुकयजमानस्य) गृहे उत्पन्न भूत-प्रेत-पिशाचादि-  
सकलदोष शमनार्थं झटित्यारोग्यता प्राप्त्यर्थं च महाविद्यास्तोत्रस्य पाठं  
करिष्ये ।
- विनियोगः ॐ अस्य श्री महाविद्या स्तोत्र मन्त्रस्याऽर्यमा ऋषिः, कालिका देवता, गायत्री छन्दः,  
श्री सदाशिव देवता प्रीत्यर्थे मनोवाञ्छित सिद्ध्यर्थे च जपे (पाठे) विनियोगः ।
- ध्यानम् उद्यच्छीतांशु-रश्मि-द्युतिचय-सदृशीं फुल्लपद्मोपविष्टां,  
वीणा-नागेन्द्र-शङ्खायुध-परशुधरां दोर्भिरीड्यैश्वर्यतुर्भिः ।  
मुक्ताहारांशु-नाना-मणियुत-हृदयां सीधुपात्रं वहन्तीं,  
वन्देऽ भीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम् ॥
- स्तोत्र ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं हलाकरीं सर्वशत्रुक्षयकरीं उत्साहकरीं  
बलवर्धिनीं सर्ववज्रकायाचितां सर्वग्रहोच्चाटिनीं पुत्र-पौत्राभिवर्द्धिनीमायुरारोग्यैश्वर्याभिवर्द्धिनीं  
सर्वभूतस्तम्भिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षिणीं सर्वलोक-वशङ्करीं सर्वराज-वशङ्करीं सर्वयन्त्र-  
मन्त्र-प्रभेदिनीमेकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पाञ्चाहिकं साप्ताहिकमार्द्धमासिकं मासिकं  
चातुर्मासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वैजयन्तिकं पैत्तिकं वातिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं कुष्ठरोग-  
जठररोग-मुखरोग-गण्डरोग-प्रमेहरोग-शुल्काविशिक्षयकरीं विस्फोटकादिविनाशनाय स्वाहा ।  
ॐ वेतालादिज्वर-रात्रिज्वर-दिवसज्वर-ग्नियज्वर-प्रत्यग्निज्वर- राक्षसज्वर-पिशाचज्वर-  
ब्रह्मराक्षसज्वर-प्रस्वेदज्वर- विषमज्वर-त्रिपुरज्वर-मायाज्वर-आभिचारिकज्वर-वष्टिज्वर-  
स्मरादिज्वर-दृष्टिज्वर-प्रयोगादि विनाशनाय स्वाहा । सर्व व्याधि विनाशनाय स्वाहा । सर्व शत्रु  
विनाशनाय स्वाहा ।  
ॐ अक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-घ्राणशूलोदरशूल-गलशूल- गण्डशूल-दन्तशूल-  
पादशूल-पादार्द्धशूल-सर्वशूल विनाशनाय स्वाहा ।  
ॐ सर्वव्याधि विनाशाय स्वाहा । ॐ सर्वशत्रु विनाशनाय स्वाहा । ॐ सर्वस्फोटक-  
सर्वक्लेश विनाशनाय स्वाहा । ॐ आत्मरक्षा ॐ परमात्मरक्षा मित्ररक्षा अग्निरक्षा प्रत्यग्निरक्षा  
परगतिवातोरक्षा तेषां सकलबन्धाय स्वाहा ।

ॐ हरदेहिनी स्वाहा । ॐ इन्द्रदेहिनी स्वाहा । ॐ स्वस्य ब्रह्मदण्डं विश्रामय । ॐ विश्रामय  
विष्णुदण्डम् । ॐ ज्वर-ज्वरेश्वर-कुमारदण्डम् । ॐ हिलि मिलि मायादण्डम् । ॐ नित्यं नित्यं  
विश्रामय विश्रामय वारुणी शूलिनी गारुडी रक्षा स्वाहा ।

- गङ्गादि पुलिने जाता पर्वते च वनान्तरे ।  
रुद्रस्य हृदये जाता विद्याऽहं कामरूपिणी ॥

ॐ ज्वल ज्वल देहस्य देहेन सकल-लोहपिङ्गिलि कटि-मपुरी किलि किलि-किलि  
महादण्ड कुमारदण्ड नृत्य-नृत्य विष्णुवन्दित-हंसिनी शङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्ष-रक्ष  
स्वाहा ।

## ॥ बीजमन्त्राः ॥

ॐ हाँ स्वाहा ।	ॐ हाँ हाँ स्वाहा ।	ॐ हीँ स्वाहा ।	ॐ हीँ हीँ स्वाहा ।
ॐ हँ स्वाहा ।	ॐ हँ हँ स्वाहा ।	ॐ हेँ स्वाहा ।	ॐ हेँ हेँ स्वाहा ।
ॐ हैँ स्वाहा ।	ॐ हैँ हैँ स्वाहा ।	ॐ होँ स्वाहा ।	ॐ होँ होँ स्वाहा ।
ॐ हौँ स्वाहा ।	ॐ हौँ हौँ स्वाहा ।	ॐ हुँ स्वाहा ।	ॐ हुँ हुँ स्वाहा ।
ॐ हः स्वाहा ।	ॐ हः हः स्वाहा ।	ॐ क्राँ स्वाहा ।	ॐ क्राँ क्राँ स्वाहा ।
ॐ क्रीँ स्वाहा ।	ॐ क्रीँ क्रीँ स्वाहा ।	ॐ क्रूँ स्वाहा ।	ॐ क्रूँ क्रूँ स्वाहा ।
ॐ क्रैँ स्वाहा ।	ॐ क्रैँ क्रैँ स्वाहा ।	ॐ क्रौँ स्वाहा ।	ॐ क्रौँ क्रौँ स्वाहा ।
ॐ क्रौँ स्वाहा ।	ॐ क्रौँ क्रौँ स्वाहा ।	ॐ क्रः स्वाहा ।	ॐ क्रः क्रः स्वाहा ।
ॐ क्रूँ स्वाहा ।	ॐ क्रूँ क्रूँ स्वाहा ।	ॐ खँ स्वाहा ।	ॐ खँ खँ स्वाहा ।
ॐ कँ स्वाहा ।	ॐ कँ कँ स्वाहा ।	ॐ घँ स्वाहा ।	ॐ घँ घँ स्वाहा ।
ॐ गँ स्वाहा ।	ॐ गँ गँ स्वाहा ।	ॐ चँ स्वाहा ।	ॐ चँ चँ स्वाहा ।
ॐ ङँ स्वाहा ।	ॐ ङँ ङँ स्वाहा ।	ॐ जँ स्वाहा ।	ॐ जँ जँ स्वाहा ।
ॐ छँ स्वाहा ।	ॐ छँ छँ स्वाहा ।	ॐ जँ स्वाहा ।	ॐ जँ जँ स्वाहा ।
ॐ झँ स्वाहा ।	ॐ झँ झँ स्वाहा ।	ॐ ठँ स्वाहा ।	ॐ ठँ ठँ स्वाहा ।
ॐ टँ स्वाहा ।	ॐ टँ टँ स्वाहा ।	ॐ ढँ स्वाहा ।	ॐ ढँ ढँ स्वाहा ।
ॐ डँ स्वाहा ।	ॐ डँ डँ स्वाहा ।	ॐ तँ स्वाहा ।	ॐ तँ तँ स्वाहा ।
ॐ णँ स्वाहा ।	ॐ णँ णँ स्वाहा ।	ॐ दँ स्वाहा ।	ॐ दँ दँ स्वाहा ।
ॐ थँ स्वाहा ।	ॐ थँ थँ स्वाहा ।	ॐ नँ स्वाहा ।	ॐ नँ नँ स्वाहा ।
ॐ धँ स्वाहा ।	ॐ धँ धँ स्वाहा ।	ॐ फँ स्वाहा ।	ॐ फँ फँ स्वाहा ।
ॐ पँ स्वाहा ।	ॐ पँ पँ स्वाहा ।	ॐ भँ स्वाहा ।	ॐ भँ भँ स्वाहा ।
ॐ बँ स्वाहा ।	ॐ बँ बँ स्वाहा ।	ॐ यँ स्वाहा ।	ॐ यँ यँ स्वाहा ।
ॐ मँ स्वाहा ।	ॐ मँ मँ स्वाहा ।		

ॐ रँ स्वाहा ।	ॐ रँ रँ स्वाहा ।	ॐ लँ स्वाहा ।	ॐ लँ लँ स्वाहा ।
ॐ वँ स्वाहा ।	ॐ वँ वँ स्वाहा ।	ॐ शँ स्वाहा ।	ॐ शँ शँ स्वाहा ।
ॐ षँ स्वाहा ।	ॐ षँ षँ स्वाहा ।	ॐ सँ स्वाहा ।	ॐ सँ सँ स्वाहा ।
ॐ हँ स्वाहा ।	ॐ हँ हँ स्वाहा ।	ॐ क्षँ स्वाहा ।	ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ शेषाय स्वाहा । ॐ गणेश्वराय स्वाहा । ॐ दुर्गे महाशक्तिक-भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस- सर्ववेताल-वृश्चिकादि भय विनाशनाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ हाँ हीँ हूँ हैं हैं हों हौँ हं हः स्वाहा । ॐ क्री क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा । ॐ शीँ शिवाय स्वाहा । ॐ सूँ सूर्याय स्वाहा । ॐ सोँ सोमाय स्वाहा । ॐ मं मङ्गलाय स्वाहा । ॐ बुं बुधाय स्वाहा । ॐ बृं बृहस्पतये स्वाहा । ॐ शुं शुक्राय स्वाहा । ॐ शं शनैश्वराय स्वाहा । ॐ रां राहवे स्वाहा । ॐ केँ केतवे स्वाहा । ॐ महाशान्तिक-भूत प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-वेताल-वृश्चिकभय-विनाशनाय स्वाहा । ॐ सिंह-शार्दूल-गजेन्द्र-ग्राह-व्याघ्रादि-मृगान् बध्नामि स्वाहा । ॐ शस्त्रं बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्रं बध्नामि स्वाहा । ॐ वायुं बध्नामि स्वाहा । ॐ गतिं बध्नामि स्वाहा । ॐ आशां बध्नामि स्वाहा । ॐ सर्वं बध्नामि स्वाहा । ॐ सर्वजन्तून् बध्नामि स्वाहा । ॐ बन्ध बन्ध मोचनं कुरु कुरु स्वाहा ।

## ॥ दिग्बन्धनम् ॥

ॐ नमो भगवते महेन्द्रदिशायांमैरावतारूढं वज्रहस्तं परिवार सहितं दिग्देवताधिपतिमैन्द्रमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ ऐन्द्रमण्डलं बन्ध-बन्ध, रक्ष-रक्ष, माचल-माचल, माक्रम्य-माक्रम्य स्वाहा ।

ॐ हाँ हीँ हूँ हैं हों हौँ हः स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ अग्निदिशायां मृगारूढं शक्तिहस्तं परिवार-सहितं दिग्देवताधिपतिम् अग्निमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ अग्निमण्डलं बन्ध-बन्ध, रक्ष-रक्ष, माचल-माचल, माक्रम्य-माक्रम्य स्वाहा ।

ॐ हाँ हीँ हूँ हैं हों हौँ हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा । ॐ नमो भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ दक्षिणदिशायां महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं परिवार-सहितं दिग्देवताधिपतिं यममण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ यममण्डलं बन्ध-बन्ध, रक्ष-रक्ष, माचल-माचल, माक्रम्य-माक्रम्य स्वाहा ।

ॐ हाँ हीँ हूँ हैं हों हौँ हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीँ क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा । ॐ नमो भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ नैर्ऋत्यदिग् दिशायां प्रेतारूढं खड्गहस्तं परिवार-सहितं दिग्देवताधिपतिं नैर्ऋत्यमण्डलं बध्नामि स्वाहा । ॐ नैर्ऋत्यमण्डलं बन्ध-बन्ध, रक्ष-रक्ष, माचल-माचल, माक्रम्य-माक्रम्य स्वाहा ।





ॐ हाँ हीं हूँ हैं हौं हः स्वाहा । ॐ क्राँ क्रीं क्रूँ क्रैँ क्रौँ क्रः स्वाहा । ॐ दुर्गे महाशान्तिक-  
भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस- ब्रह्मराक्षस-वेताल-वृश्चिकादिभय विनाशनाय स्वाहा ।

ॐ पूर्वदिशायां व्रजको नाम राक्षसस्तस्य व्रजकस्याष्टादश कोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां  
बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ अग्निदिशायामग्निज्वालो नाम राक्षसस्तस्याग्निज्वालस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य  
पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ दक्षिण दिशायामेकपिङ्गलिको नाम राक्षसस्तस्यैकपिङ्गलिकस्या-ऽष्टा-दश कोटि-  
सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ नैर्ऋत्यदिशायां मरीचिको नाम राक्षसस्तस्य मरीचिकस्या ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य  
पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ पश्चिमदिशायां मकरो नाम राक्षसस्तस्य मकरस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य  
दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ वायव्यदिशायां तक्षको नाम राक्षसस्तस्य तक्षकस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य  
दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ उत्तरदिशायां महाभीमो नाम राक्षसस्तस्य भीमस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य  
दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ ईशानदिशायां भैरवो नाम राक्षसस्तस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य दिशां  
बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ।

ॐ अधः दिशायां पाताल निवासिनो नाम राक्षसस्तस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य तस्य  
पिशाचस्य दिशां बध्नामि स्वाहा ।

ॐ ब्रह्मदिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्या-ऽष्टादशकोटिसहस्रस्य पिशाचस्य  
दिशां बध्नामि स्वाहा । ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा । ॐ नमो भगवते  
भैरवाय स्वाहा । ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा । ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा । ॐ नमो महाशान्तिक-  
भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस- वेताल-वृश्चिकभय विनाशनाय स्वाहा ।

ॐ शिखायां मे क्लीं ब्रह्माणी रक्षतु ।

ॐ हां हीं व्रीं व्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।

ॐ शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी ।

ॐ हां हीं व्रीं व्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।

ॐ भुजौ रक्षतु सर्वाणी ।

ॐ हां हीं व्रीं व्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।

ॐ उदरे रक्षतु रुद्राणी ।

ॐ हां हीं व्रीं व्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।

ॐ जङ्घे रक्षतु नारसिंही ।

ॐ हां हीं व्रीं व्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।

ॐ पादौ रक्षतु महालक्ष्मी ।

ॐ हां हीं व्रीं व्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।

ॐ सर्वाङ्गे रक्षतु सुन्दरी ।

ॐ हां हीं व्रीं व्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।



**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

**KAPWING**





**COLLECTION OF VARIOUS**  
**-> HINDUISM SCRIPTURES**  
**-> HINDU COMICS**  
**-> AYURVEDA**  
**-> MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**Icreator of  
hinduism  
server!**

 **KAPWING**

- परिणामे महाविद्या महादेवस्य सन्निधौ ।  
एकविंशतिवारेण पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात् ॥ ॥ १ ॥

- स्त्रियो वा पुरुषो वापि पापं भस्म समाचरेत् ।  
दुष्टानां मारणं चैव सर्वग्रह निवारणम् ।  
सर्व कार्येषु सिद्धिः स्यात् प्रेतशान्तिर्विशेषतः ॥ ॥ २ ॥

महादेव के समीप में इस महाविद्यास्तोत्र के इक्कीस बार पाठ करने से सिद्धि प्राप्त होती है ॥ १॥ चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं । दुष्टों का मारण तथा सब ग्रहों की शान्ति भी होती है । और सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है । विशेष करके प्रेतबाधा की शान्ति निश्चित रूप से होती है ॥ २॥

- सर्व मंत्र कीलन स्तोत्र मन्त्रः

- ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
- नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहम् ॥
- अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य जलं पाययेत् ।

इस प्रकार श्री भैरवी तन्त्र में भगवान् शङ्कर से कही गयी महाविद्या समाप्त हुई । इस स्तोत्र का उत्कीलन मन्त्र है – ॐ उग्रं वीरं से – नमाम्यहम् तक । इस मन्त्र से एकसौ आठ बार जल को अभिमन्त्रित कर पिलाना चाहिये अथवा कुश से मार्जन करे ।

॥ इति श्री भैरवी तन्त्रे शिवप्रोक्ता सप्रयोग महाविद्या स्तोत्रः सम्पूर्णः ॥